

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड

अंको का विभाजन Marking Scheme (2024-25)

कक्षा- 10+2

विषय : OSS Hindi

Q.No.	Questions	Marks
1	कार्यालय के लिए	1
2	सम्प्रेषण	1
3	ल व्यंजन से	1
4	ग आधे से	1
5	गणितीय एवं तर्क प्रभाग	1
6	विंडोज के आकार को छोटा करना	1
7	कार्बन	1
8	निर्गम	1
9	आत्म	1
10	प्रेषक	1
11	ऊपर से नीचे सम्प्रेषण	1
12	न, ने, नहीं, और दिन के लिए।	1
13	अन्दर	1
14	12	1
15	स्टार्ट	1
16	<p>प्रश्न 16. कार्यालय हेतु रिबिडकीनुमा लिफाफा बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह कार्यालय में समय को बचत करने में सहायक होता है। सामान्य लिफाफों पर पते लिखने पर पत्रों को इस प्रकार भेजा जाता है परन्तु रिबिडकीनुमा लिफाफों में पत्र को इस प्रकार मोड़कर डाला जाता है जिससे पत्र पर लिखा पता वाइर माफ-2 दिखाई देता है।</p>	2
17	<p>प्रश्न 17 (i) स्टार में किसी भी अनाधिकृत व्यक्तियों को प्रवेश न करने दे। (ii) स्टार में सामग्री को प्रयोजित स्थान रखें। (iii) सामग्री का उचित रिकॉर्ड।</p>	2
18	<p>प्रश्न 18. जब अगली सभा की सूचना पूर्व सभा में ही दे दी जाती है अर्थात् अगली सभा का दिनांक, समय, स्थान जब पूर्व सभा में ही निर्धारित कर दिया जाता है तो इस सभा की सूचना को उचित करने की आवश्यकता नहीं होती।</p>	2

19	<p>प्रश्न 19 अर्थकरण:- आशुलिपि में विशेष बात यह है कि किसी व्यंजन रेखा को आधा करने से उसमें कुछ जुड़ जाता है, घटता नहीं। आशुलिपि में व्यंजनों को 2 बरा तबो तबो व्यंजनों के योग के लिए आधा करते हैं।</p>	2
20	<p>प्रश्न 20 द्विगुणन सिद्धान्त:- व्यंजन रेखाओं को आधा किया जाता है तो उनमें कुछ व्यंजनों का योग होता है। इसी प्रकार व्यंजन रेखाओं को दुगुना करने से भी उनके कुछ व्यंजनों का योग होता है। कर, कार, तर, तार, उर, उार, रर, रार, दर, दार आदि। (क) सरल रेखाओं को तबो दुगुना किया जाता है, जब उनमें पहले कोई व्यंजन रेखा / वृत्त / हुक हो या उन पर अन्त में हुक लगा हो जैसे:- खन्वर कलाकार चरित्र आदि</p>	2
21	<p>प्रश्न 21 भाउस एक सांकेतिक उपकरण है जिसका प्रयोग सांकेतिक रिश्ते को रेखीन पर निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह एक छोटा बॉक्स है जिसकी तली में छोटा सा बॉल जुड़ा होता है यह हमेशा कुंजीपरल के सहायक के रूप में कार्य करता है।</p>	2
22	<p>प्रश्न 22 (1) कुंजीपरल (2) भाउस (3) जीपसिस्क (4) ट्रेकबॉल</p>	2
23	<p>प्रश्न 23 (1) टेलीफोन डूर-2 तक शीघ्र सम्पर्क स्थापित करता है। (2) टेलीफोन संदेशों को गोपनीयता प्रदान करता है। (3) टेलीफोन द्वारा संचार से समय, श्रम व धन को बचत होती है।</p>	2
24	<p>प्रश्न 24 गणपूर्ति के आभेपाम, सदस्यों को उस संख्या से है जो कि सभा की कार्यवाही प्रारम्भ करने के लिए उपस्थित होने आवश्यक है। उसके लिए निम्न सभाओं कम्पनी आदि के लिए अलग-2 नियम हैं। जैसे पाब्लिक कम्पनी की द्विगुण रिश्ते में पांच सदस्यों को आवश्यकत तब से उपस्थित होना। तथा किसी प्राइवेट कम्पनी में दो सदस्यों को आवश्यकत तब से उपस्थित होना-सभा की गणपूर्ति माना जाता है। यह गणपूर्ति सभा के लिए निश्चित समय से आधे घण्टे के भीतर होने चाहिये। अन्यथा सभा को स्थगित कर देना चाहिये।</p>	3

<p>25</p>	<p>प्रश्न 25 सामान्य शब्दों में मोबाइल का शाब्दिक अर्थ है गतिशील अर्थात् वह जो उभरता गति करता रहे। मोबाइल एक ऐसा उपकरण है जो एक व्यक्ति के निर्देशानुसार गति करता है। इसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से ले जाया जा सकता है। वर्तमान समय में मोबाइल मौखिक संचार का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। धीरे-धीरे सभी कार्यालयों में टेलीफोन का स्थान मोबाइल फोन लेते जा रहे हैं। मोबाइल फोन के माध्यम से कोई व्यक्ति किसी भी समय दूसरे व्यक्ति को अपनी बात कह सकता है एवं सुन सकता है। मोबाइल फोन ने कार्यालय के कार्य में तीव्रता लायी है तथा कार्यालय के आधुनिकीकरण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।</p>	<p>3</p>
<p>26</p>	<p>प्रश्न 26 संचार की सांख्यिक विधियों में घण्टी और गुंजक का प्रयोग किया जाता है। घण्टी का बजना दलाने से कमरे के बाहर बाहर के बड़े चपरासियों को यह नहीं पता चल पाता कि किस कमरे की घण्टी बजी है। अगर सन्देशवाहक दूसरे कमरे में चला जाता है तो अधिकारी बिना बुलाए उसे दूरवकर नाराज हो सकता है। इसलिए आधुनिक कार्यालयों में गुंजकों का बजना का प्रयोग होता है। गुंजक का बजना अधिकारी द्वारा दलाने से इतनी दूरी के साथ ही कमरे के बाहर लगी लाल बत्ती जल जाती है जिससे इसलिए सन्देशवाहक उसी कमरे में प्रवेश करता है। जहाँ से बुलावा आता है। दूसरे कमरे में जाने का गलती नहीं करता है। लाभ :- (1) सरलता (2) सुविधा (3) समय की बचत। हानि :- (1) सीमित उपयोग (2) शोर के कारण अन्य कम चारोंपों के काम में बाधा उत्पन्न होती है।</p>	<p>3</p>
<p>27</p>	<p>प्रश्न 27</p> <p>सूर्य चन्द्रमा ग्रह शुक्र) ① शनि बुध शुक्र ① कैतु मंगल ①</p>	<p>3</p>

28	<p>जनवरी ✓ फरवरी ✓ मार्च ✓ अप्रैल ✓ मई ✓ जून ✓ जुलाई ✓ अगस्त ✓ सितम्बर ✓ अक्टूबर ✓ नवम्बर ✓ दिसम्बर ✓</p>	3
29	<p><u>प्रश्न 29</u> <u>मॉनीटर</u> :- संगणक प्रणाली के निर्गम उपकरणों में दूरस्थ पदार्थन प्रभाग को एक मुख्य भाग माना जाता है। इसे मॉनीटर कहा जाता है। यह एक ऐसा उपकरण है जो टी.वी. के समान दिखाने देता है ① तथा निर्गम के पदार्थन के लिए प्रयोग किया जाता है। यह पाठ्य, ध्वनि, चित्रों आदि को पदार्थित करने के लिए कैम्बोड किंगों, ट्यूब का प्रयोग करता है। जब एक कुंजी को दबाया जाता है ① तो नियंत्रण प्रभाग सूचना प्राप्त करता है तथा उन अक्षरों को आभिलषित करने के लिए मॉनीटर को सूचना भेजता है जो सूचना इस उपकरण पर पदार्थित होती है उसे सॉफ्ट कॉपी कहा जाता है ①</p>	3
30	<p><u>प्रश्न 30</u> <u>स्पीकर</u> :- यह एक निर्गम उपकरण है जिसका प्रयोग कम्प्यूटर द्वारा आवाज को सुनने के लिए किया जाता है। यह मनोरंजन का एक साधन माना जाता है ① जैसे गीत सुनने के लिए भी किया जाता है। स्पीकर मद्रबोर्ड में अन्तर्निहित भी हो सकते हैं। या अलग भाग के रूप में भी हो सकते हैं। अलग स्पीकरों को एक केबल के माध्यम से कम्प्यूटर के साथ जोड़ा जाता है। ① यदि हम अलग स्पीकर सेट को कच नहीं करना चाहते हैं तो ऐसा भारतीय में हेडफोन के द्वारा भी अन्तर्निहित स्पीकरों से सुना जा सकता है। ①</p>	3
31	<p>कार्यालयों में कम्प्यूटर का प्रयोग (1) वेतन प्रणाली यह प्रणाली पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत है। आजकल वेतन की गणना कम्प्यूटर द्वारा की जाती है। इसके द्वारा उद्योगों में कर्मचारियों का डाटाबेस बनाया जाता है तथा इसकी सहायता से वेतन की गणना की जाती है। अंक-1 (2) कार्यालय स्वचालन यह प्रणाली दिन-प्रतिदिन प्रसिद्ध हो रही है। आजकल, कार्यालयों में कम्प्यूटर के प्रयोग से पेपर कार्य कम हो गया है। ऐसा शब्द संसाधक, फैक्स मशीन, मौडम तथा मुद्रक आदि के कारण हुआ है। अंक-1 (3) रिकॉर्ड रख रखाव प्रणाली वह प्रणाली जिसमें कम्प्यूटर का प्रयोग सभी कर्मचारियों का ऑफिस रिकॉर्ड तथा पर्सनल रिकॉर्ड रखने के लिए किया जाता है, रिकॉर्ड संगठन की कार्यकुशलता बढ़ाने में सहायता करते हैं। अंक-1</p>	3

कार्यालय के प्रत्येक स्तर पर कागजी कार्यवाही की जाती है अतः लेखन सामग्री एक कार्यालय की मूलभूत आवश्यकता होती है। विना लेखन सामग्री के कार्यालय में लिपिकीय कार्य नहीं हो सकता। जैसे-जैसे कार्यालय का विस्तार होता है वैसे-वैसे लेखन सामग्री की मांग बढ़ती जाती है। लेखन सामग्री के अन्तर्गत पैन, कागज, स्याही, पेंसिल, पैड, पिन, नोटबुक, रजिस्टर, टाइपराइटर के रिबन, स्टेंसिल, सेलो टेप, स्टैपलर, टैग, गोंद, डायरी, क्लिप, रबड़ इत्यादि आते हैं, जो प्रतिदिन कार्यालय में प्रयोग किए जाते हैं।

अंक-1

परिभाषा

जॉर्ज टैरी के अनुसार, "लेखन सामग्री से आशय कार्यालय में प्रतिदिन प्रयुक्त होने वाली सामग्री से है।"

लेखन सामग्री का निर्गमन

लेखन सामग्री को जारी करने के लिए एक रजिस्टर का प्रयोग किया जाता है। इस रजिस्टर में कार्यालय में उपलब्ध सभी सामग्रियों को दर्ज किया जाता है। जब भी किसी विभाग या व्यक्ति की ओर से लेखन सामग्री की मांग की जाती है तो उन्हें, सामग्री निर्गमित करने से पहले कुछ तथ्यों का पूर्ण विवरण रजिस्टर में लिखा जाता है जैसे सामग्री प्राप्त करने वाले विभाग या व्यक्ति का नाम, सामग्री की मात्रा, सामग्री निर्गमित करने की तिथि आदि। इसके अतिरिक्त, लेखन सामग्री रजिस्टर में सामग्री की पूर्ति और स्टॉक का भी पूरा विवरण लिखा जाता है ताकि सामग्री को समाप्त होने से पहले खरीदा जा सके। लेखन सामग्री निर्गमित करना किसी भी कार्यालय का महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही कार्यालय के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है। अतः लेखन सामग्री निर्गमित करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है :

अंक-1

(1) बिना अधिकृत मांग पत्र के लेखन सामग्री निर्गमित नहीं की जानी चाहिए।

(2) छोटी-छोटी कार्यालय सामग्रियों जैसे पैन, पेंसिल, रबड़, रिबन, स्याही आदि को वर्जनों में लिखना चाहिए। इससे इनकी गणना करना आसान हो जाता है।

(3) लेखन सामग्री के स्टॉक के विषय में पूरी जानकारी रखनी चाहिए ताकि समय पर लेखन सामग्री के स्टॉक का उचित प्रबन्ध किया जा सके।

अंक-1

लेखन सामग्री का महत्व कार्यालय में लेखन सामग्री के महत्व को निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट किया जा सकता है:

(1) जिस प्रकार कारखाने में कच्चे माल की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार कार्यालय में लेखन सामग्री की आवश्यकता होती है। अन्य शब्दों में लेखन सामग्री के बिना कार्यालय का कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता।

अंक-1

(2) उचित मात्रा एवं उचित क्वालिटी की लेखन सामग्री के अभाव का व्यवसाय की साख पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

(3) लेखन सामग्री कार्यालय के लिए ऊर्जा के समान होती है अर्थात् उचित मात्रा में लेखन सामग्री की उपलब्धता कर्मचारियों के कार्यों को गतिशीलता प्रदान करती है।

(4) वर्तमान समय में लेखन सामग्री का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। आधुनिक समय में कार्यालय अपने बजट का 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत लेखन सामग्री के लिए व्यय करती है।

अंक-1

प्रत्यय

प्रत्यय: जो शब्द या अक्षर किसी शब्द के अंत में मिलकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। इन्हें जोड़/काटकर या अलग लिखते हैं।
(क) बहुत से शब्द उपसर्ग एवं प्रत्यय दोनों रूपों में प्रयोग किए जाते हैं किन्तु उनका रूप वही रहता है, जैसे-

परम्परागत भाषागत देश भक्ति भक्तिभाव
जातिगत गत-सप्ताह विगत दलगत

(ख) प्रत्यय शब्दों को प्रकट करने के लिए निम्नांकित व्यंजन रेखाएं हैं। अतः-

1. श व्यंजन रेखा से 'कांशा-कांशी' प्रकट होता है, जैसे-

उत्तराकांशी हिताकांशी महत्वाकांशी-क्षा शुभाकांशी

2. र व्यंजन से 'कारी' प्रकट होता है, जैसे-

क्रान्तिकारी कल्याणकारी विनाशकारी विघ्नकारी

3. ख आधे से 'लिखित' प्रकट होता है, जैसे-

हस्तलिखित निम्नलिखित अलिखित स्वलिखित

4. क आधे से 'अंकित' प्रकट होता है, जैसे-

निम्नांकित पृष्ठांकित नामांकित रेखांकित

5. कन् से 'अंकन' प्रकट होता है, जैसे-

पृष्ठांकन रेखांकन चित्रांकन मूल्यांकन

कम्प्यूटर एक तेज विद्युतीय मशीन है जो उपयोगकर्ता द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार आंकड़ों को संसाधित करके उसे निर्गम के रूप परिणाम प्रदान करती है। कम्प्यूटर स्विच, तार, मोटर, ट्रांजिस्टर्स तथा सिलिकॉन चिपों को फ्रेम पर जोड़ता है।

यह फ्रेम के तत्वों जैसे कुंजीपटल, मुद्रक, डिस्क ड्राइव, चुम्बकीय टेप ड्राइव तथा केन्द्रीय संसाधन प्रभाग को एक नेटवर्क तार में एकत्रित करके जोड़ता है। एक नेटवर्क में तारों से जुड़े अवयवों को गणनात्मक प्रणाली के रूप में जाना जाता है इसे कम्प्यूटर कहा जाता है। अंक 1 कम्प्यूटर की विशेषताएं :

कम्प्यूटर प्रत्येक संगठन में आंकड़ों को संसाधित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह कम समय में एवं अधिक मात्रा में आंकड़ों को सरलता तथा शुद्धता से संसाधित कर सकता है। इसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं

(1) अधिक गति : कम्प्यूटर एक तीव्र विद्युतीय मशीन है जिसके द्वारा लाखों गणनाओं को कुछ सैकड़ों में निष्पादित किया जा सकता है जबकि मानव इस कार्य को पूरा करने में कई महीनें लगा देता है। कम्प्यूटर द्वारा किए गए कार्यों को मिलीसैकिंड, माइक्रोसैकिंड नैनोसैकिंड तथा पीरोसैकिंड में मापा जाता है। अंक 1

(2) शुद्धता : अत्यधिक तेज होने के अतिरिक्त, कम्प्यूटर द्वारा किया जाने वाला कार्य शुद्ध एवं सही होता है। अशुद्धियां ऑपरेटर तथा प्रोग्रामर द्वारा प्रदान किए गए अपर्याप्त आंकड़ों अथवा तर्कशास्त्र सम्बन्धी गलतियों के कारण उत्पन्न हो सकती हैं जिसे सामान्य रूप से गारबेज इन गारबेज आउट (Garbage In Garbage Out) के नाम से जाना जाता है।

(3) स्मरण क्षमता: एक कम्प्यूटर में मानव की तुलना में अधिक मात्रा में आंकड़ों को संचित करने की क्षमता होती है तथा आवश्यकता होने पर हम जब चाहे इन आंकड़ों को प्राप्त कर सकते हैं परन्तु मानव के लिए यह सम्भव नहीं है क्योंकि वह सूचना को कुछ समय तक ही याद रख सकता है तथा उसके पश्चात् भूल जाता है। अंक 1

(4) कर्मबद्धता : कम्प्यूटर बिना किसी थकावट तथा गलती के लगातार किसी कार्य को कर सकता है। वह किसी भी कार्य को दोबारा उसी गति तथा शुद्धता से कर सकता है परन्तु मनुष्य

के लिए यह सम्भव नहीं है।	अंक 1
<p>(5) व्यापकता: कम्प्यूटर द्वारा किया गया कार्य लोचशील होता है। यह एक समय में एक साथ विभिन्न प्रकार के कार्य करके उन्हें यह तार्किक क्रम प्रदान करता है। एक क्षण में, यह लेखांकन विवरण तैयार करता है तथा दूसरे क्षण में यह दो क्रियाओं के मध्य डॉफ्ट का प्रयोग भी कर सकता है। यह मुद्रक को किसी भी वस्तु या डिज़ाइन का प्रिंट लेने की स्वीकृति प्रदान करता है। इसका अर्थ यह है कि यह उन सभी कार्यों को पूरा कर सकता है जिनकी सूचना तार्किक क्रम में प्रदान की जाती है।</p>	अंक 1